National Seminar
on
प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता
Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance
19th - 20th January, 2020
Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot, UP

Seminar Report

- ***Inaugural Session***
- ***Technical Session and Resource Person Detail***
- ***Valedictory Session***
- ***Conclusion***
- ***Contribution of Seminar***
- ***List of Paper Presentators***
- ***List of Participants***
- ***Some Photographs of Seminar***
- ***Some Paper Cutting of Newspapers***

Convener
Dr. Rajesh Kumar Pal
Dept. of Soctiology,
Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi,
Chitrakoot, U.P 210205
Mob. 9450171025
Email: dr.rajeshkumarpal@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता

(Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance)

आयोजक : समाजशास्त्र विभाग

गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट, उ०प्र०

दिनाँक : 19-20 जनवरी, 2020

उद्घाटन सत्र

इण्डियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी *''प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता''* का आयोजन दिनाँक : 19–20 जनवरी, 2020 को समाजशास्त्र विभाग, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट द्वारा किया गया। पंजीकरण एवं जलपान का कार्य प्रातः 08:00 बजे से प्रारम्भ हुआ। प्रातः 10:00 बजे मुख्य अतिथि प्रोफेसर कपिलदेव मिश्र, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, म0प्र0 के द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अभिमन्यु सिंह, निदेशक, सर्वोदय सेवा संस्थान, चित्रकूट उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ0 विनोद शंकर सिंह, विभागाध्यक्ष समाजकार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, म0प्र0 एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ0 राजेश त्रिपाठी, एसो0प्रोफेसर, ग्रामीण प्रबंधन विभाग, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, म0प्र0, डॉ0 राकेश राणा, समाजशास्त्र विभाग, एम0एम0पी0जी0 कालेज, गाजियाबाद ने अपने विचार रखे।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर कपिलदेव मिश्र ने प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल्य तत्वों पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा सनातनी परम्परा के विषय में विषद् प्रकाश डाला। उन्होंने रामायण, भगवद्गीता एवं वेद, उपनिषदों की युगानुकूल व्याख्या करने पर भी बल दिया जिससे प्राचीन भारतीय संस्कृति नवीन मूल्यों के साथ समायोजित हो सके। उन्होंने कहा कि आज प्राचीन संस्कृति एवं मूल्यों की रक्षा के लिए प्राचीन सामाजिक संस्थाओं को उनके मूल स्वरूप में जीवित रखना बहुत कठिन होता जा रहा है। भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों के संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, सामाजिक संगठनों एवं पारिवारिक संस्थाओं को आगे आना होगा। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अभिमन्यु सिंह ने पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों के पतन के विषय में चर्चा करते हुए प्राचीन जलधाराओं की व्याख्या आध्यात्मिक संदर्भ में की। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ0 विनोद शंकर सिंह ने समाजीकरण के बदलते साधनों पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में डॉ0 राजेश त्रिपाठी ने प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाओं के लाभकारी मूल्यों को कैसे बचाया जा सके, इस पर विहंगम दृष्टि प्रस्तुत की। डॉ0 राकेश राणा ने भारतीय संस्कृति पर हावी हो रहे बाजारवाद के प्रभाव एवं कुप्रभाव पर अपना वक्तव्य केन्द्रित किया। संगोष्ठी के संयोजक/प्रभारी प्राचार्य डॉ0 राजेश कुमार पाल ने बताया कि भारतीय समाज आज एक संक्रमणकालीन स्थिति से गुजर रहा है। अनादिकाल से चली आ रहीं परम्परायें, संस्थायें एवं मान्यतायें नवीन चुनौतियों का सामना कर रही हैं। पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क ने पिछली शताब्दी में

भारतीयों को अपने मूल्यों तथा दृष्टिकोणों को पुनरीक्षित करने को विवश किया है। आज यह प्रश्न पुनः भारतीय मनीषा को व्यग्र कर रहा है कि हम कैसे अपने वैशिष्ट्य बनाये रखते हुए भी पाश्चात्य ज्ञान, प्रौद्योगिकी और जीवनस्तर को अपना सकें। अतः यह आवश्यक है कि हम भारतीय समाज की संरचना के स्वरूप और उसके मूल्यों का किसी पूर्वाग्रह के बिना अध्ययन करें, साथ ही नवीन परिस्थितियों से उद्भूत परिवर्तन, समस्याओं एवं लाभों का मूल्यांकन करें। उद्घाटन सत्र के अंत में डॉ0 अमित कुमार सिंह ने सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

उद्घाटन सत्र के उपरांत सूक्ष्म स्वल्पाहार के बाद 11:00 बजे से 01:00 बजे तक प्रथम तकनीकी सत्र का शुभारंभ हुआ। प्रथम तकनीकी सत्र के लिए जो उपविषय/बिन्दु निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *वर्ण व्यवस्था एवं उसका महत्व*
- *आश्रम व्यवस्था एवं उसका महत्व*

प्रथम तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 19.01.2020 समयः 11:00 से 01:00 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 विनोद शंकर सिंह	विभागाध्यक्ष समाजकार्य	महात्मा गांधी चित्रकूट गामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
2.	डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी	एसो0 प्रोफेसर हिन्दी	दयानंद वैदिक कालेज उरई, जालौन, उ0प्र0
3.	डॉ0 एल0सी0 अनुरागी	राजनीतिशास्त्र विभाग	वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महोबा
4.	डॉ0 पवन कुमार सिंह	राजनीति विज्ञान विभाग	सावित्रीबाई फुले राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चकिया, चन्दौली, उ0प्र0

प्रथम सत्र में वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था तथा उनके महत्व से सम्बन्धित शोध पत्र पढ़े गये तथा मुख्य वक्ताओं ने भी इन पर अपने विचार रखे। इस सत्र में निष्कर्षात्मक रूप में यह तथ्य सामने आया कि वर्ण व्यवस्था की प्राचीन समय में चाहे जो भी प्रासंगिकता रही हो किन्तु वर्तमान समय मे इसका महत्व केवल सैद्धांतिक रूप में ही है। व्यवहारिक रूप से वर्ण व्यवस्था का वर्तमान समाज में कोई महत्व नहीं रह गया है। यद्यपि आश्रम व्यवस्था के कुछ पहलू आज भी समाज के लिए महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। आश्रम व्यवस्था व्यक्तियों के दीर्घायु होने की संकल्पना है। यह अवश्य है कि आज के इस युग में आश्रम व्यवस्था के संपूर्ण आश्रमों का निर्वाह सफलतापूर्वक असंभव है।

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र का समय 01:00 से 02:30 बजे तक निर्धारित किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र के लिए जो उपविषय/बिन्दु निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *कर्म का सिद्धांत एवं वर्तमान में उसका महत्व*
- *जन्म और पुनर्जन्म की प्रासंगिकता*

द्वितीय तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 19.01.2020 समयः 01:00 से 02:30 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 राकेश राणा	समाजशास्त्र विभाग	एम0एम0पी0जी0 कालेज गाजियाबाद, उ0प्र0
2.	डॉ0 विनोद मिश्रा	विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट उ0प्र0
3.	डॉ0 ऊषा सेन	शिक्षक शिक्षा विभाग	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज, बाँदा, उ0प्र0
4.	डॉ0 सीताराम सिंह	अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग	गनपत सहाय पी0जी0 कालेज, सुल्तानपुर, उ0प्र0

द्वितीय सत्र में निष्कर्षात्मक रूप में शोध पत्र एवं मुख्य वक्ताओं के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि कर्म का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। इस सिद्धांत की वजह से व्यक्ति गलत कार्यों को करने से डरते हैं। कर्म के अनुसार ही व्यक्ति का जन्म और पुनर्जन्म होता है। इस सिद्धांत की हिन्दू संस्कृति में गहरी पैठ है।

तृतीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् 02:30 से 03:00 बजे तक का समय भोजनावकाश का रहा। इसके पश्चात् तृतीय तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसका समय 03:00 बजे से 05:00 बजे तक निर्धारित था। इस सत्र के लिए जो उपविषय/बिन्दु निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *संयुक्त परिवार एवं वर्तमान परिदृश्य में उसकी प्रासंगिकता*
- *परिवार एवं विवाह का बदलता स्वरूप*

तृतीय तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 19.01.2020 समयः 03:00 से 05:00 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय	कुलसचिव/अध्यक्ष पुरातत्व एवं इतिहास विभाग	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उ0प्र0
2.	डॉ0 अमूल्य सिंह	एसो0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	साकेत पी0जी0 कालेज, अयोध्या, उ0प्र0
3.	डॉ0 विजय कुमार यादव	वनस्पतिशास्त्र विभाग	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज बाँदा, उ0प्र0
4.	डॉ0 मनोज अस्थाना	वनस्पतिशास्त्र विभाग	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज बाँदा, उ0प्र0

तृतीय तकनीकी सत्र में निष्कर्षात्मक रूप में शोध पत्र एवं मुख्य वक्ताओं के उद्‌बोधन से यह परिलक्षित हुआ कि संयुक्त परिवार बहुत तेजी से विघटित हुए हैं। आज की नवयुवा पीढ़ी संयुक्तता को पसंद नहीं करती परन्तु जहाँ पति पत्नी दोनों कार्यरत हैं वे संयुक्त परिवार के पक्ष में हैं किन्तु वे भी अब संयुक्त परिवार की स्थापना चाह कर भी नहीं कर सकते क्योंकि अब वैसा वातावरण नहीं रहा। संयुक्त परिवार के टूटने की वजह से अनेक समस्याएँ भी प्रकट हुई हैं। एकल परिवार और भी एकल होता जा रहा है। विवाह में संस्कारों का तेजी से लोप हुआ है। लिव इन रिलेशनशिप ने विवाह का मूल तत्व ही समाप्त कर दिया है। सरोगेट मदर ने संतानोत्पत्ति की नई व्याख्या प्रस्तुत की है जिसका समाज पर कुप्रभाव संबंधी दृष्टिकोण ही अधिक है।

तृतीय तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् 05:00 से 06:00 बजे तक का समय चित्रकूट भ्रमण का रहा। चित्रकूट भ्रमण के बाद सूक्ष्म जलपान के साथ प्रथम दिन के कार्यक्रम का समापन हुआ।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

दूसरे दिन दिनाँक 20.01.2020 को प्रातः 09:00 से 09:30 बजे तक स्वल्पाहार के पश्चात् चतुर्थ तकनीकी सत्र का प्रारम्भ 09:30 से अपराह्न 11:30 तक रखा गया। इस सत्र के लिए जो उपविषय/बिन्दु निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *पुरुषार्थ एवं उनका महत्व तथा उनकी प्रासंगिकता*
- *संस्कारों का विलुप्तीकरण एवं उनका विकल्प*

चतुर्थ तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 20.01.2020 समयः 09:30 से 11:30 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 राजेश त्रिपाठी	एसो0प्रोफसर ग्रामीण प्रबंधन विभाग	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
2.	डॉ0 एस0 कुरील	एसो0प्रोफेसर रानीतिशास्त्र	महामति प्राणनाथ महाविद्यालय मऊ, चित्रकूट, उ0प्र0
3.	डॉ0 जे0पी0 सिंह	असि0 प्रोफेसर इतिहास	राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदा, उ0प्र0

चतुर्थ तकनीकी सत्र में व्याख्यानों से यह बात स्पष्ट हुई कि पुरुषार्थ की अवधारणा में वर्तमान में धर्म एवं मोक्ष का महत्व कम हुआ है जबकि अर्थ एवं काम की चाह अधिक प्रबल हुई है। धन प्राप्ति के लिए व्यक्ति साधनों की पवित्रता को बिलकुल ध्यान में नहीं रख रहा है। इसी प्रकार काम पर संयम न होने से विभिन्न प्रकार के यौन अपराधों में तीव्रतर वृद्धि हुई है। इस सत्र में संस्कारों पर भी चर्चा हुई। परिचर्चा में यह बात प्रकट हुई कि संस्कारों का विलोपन बहुत तेजी से हो रहा है और उनका कोई विकल्प भी नहीं दिखाई दे रहा। वर्तमान में बर्थ–डे, शादी की सालगिरह, पार्टियाँ, गीत–संगीत, डांस ही प्रमुख संस्कार रह गये हैं। वर्तमान में हैलो एण्ड टाटा, बॉय–बॉय, फेसबुक एवं वाट्‌सएप पर लाइक जैसे मूल्यहीन मानदण्ड प्रचलन में बहुत तेजी से बढ़े हैं।

पंचम तकनीकी सत्र

चतुर्थ तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् पंचम सत्र का समय 11:30 से 01:30 बजे तक निर्धारित किया गया। इस सत्र में जो उपविषय निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *परम्परागत गाँव पंचायतें एवं उनका महत्व*
- *वृद्धों की समस्याएँ एवं उनके स्थायित्व का विकल्प*
- *समाजीकरण के बदलते साधन एवं उनका प्रभाव*

पंचम तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 20.01.2020 समयः 11:30 से 01:30 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम
1	डॉ0 राजेश कुमार पाल	अध्यक्ष समाजशास्त्र	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट, उ0प्र0
2.	डॉ0 चिरंजीवी पाल	समाजशास्त्र विभाग	सी0एम0पी0 कालेज, प्रयागरा, उ0प्र0
3.	डॉ0 देवेन्द्र पाण्डेय	ग्रामीण प्रबंधन विभाग	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0

पंचम सत्र में शोध पत्रों के वाचन एवं वक्ताओं के उद्‌बोधनों से निष्कर्षात्मक रूप में यह स्पष्ट हुआ कि गाँवों में संगठन की दृष्टि से परम्परागत गाँव पंचायतें अधिक महत्वपूर्ण थीं। यद्यपि कुछ दोष परम्परागत गाँव पंचायतों में भी था परन्तु जिस तरह से आज की पंचायतों के चुनाव में परिदृश्य देखने को मिलते हैं उसकी अपेक्षा तो प्राचीन गाँव पंचायतें ही ठीक थीं। परिचर्चा में यह बात भी सामने आयी कि वृद्धों के मान–सम्मान में तेजी से कमी आयी है जिसकी वजह से वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ी है। समाजीकरण के बदलते साधनों में परिवार, खेल–कूद समूह, पड़ोस का प्रभाव घटा है जबकि द्वितीयक साधनों का समाजीकरण के साधनों के रूप में महत्व बढ़ा है। समाजीकरण के बदलते नवीन साधनों ने व्यक्ति में व्यक्तिवादिता के तत्वों को बढ़ाया है।

षष्ठम् तकनीकी सत्र

पंचम तकनीकी सत्र के समापन पश्चात् सभी अतिथियों, शोधकर्ताओं एवं अन्य उपस्थितजनों ने भोजन ग्रहण किया। भोजनोपरांत 02:00 से 03:30 बजे तक षष्ठम् तकनीकी सत्र संचालित रहा। इस सत्र में जो उपविषय निर्धारित किये गये वे निम्नवत् हैं–

- *भौतिक संसाधनों की व्यापकता और मानवजीवन*
- *नैतिक मूल्य एवं सामाजिक जीवन में उनका महत्व*
- *प्रकृति एवं मनुष्य में सम्बन्ध*

षष्ठम् तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन्स का विवरण

(Resource Person) दिनाँकः 20.01.2020 समयः 02:00 से 03:30 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 अमित कुमार सिंह	असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट, उ0प्र0
2.	डॉ0 कमलेश कुमार	समाजशास्त्र विभाग	वीरांगना लक्ष्मीबाई राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झाँसी, उ0प्र0
3.	डॉ0 अनिल कुमार सिंह	हिन्दी विभाग	वीरांगना लक्ष्मीबाई राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झाँसी, उ0प्र0

षष्ठम सत्र में व्याख्यानों से जो निष्कर्षात्मक तथ्य सामने आये उनसे यह परिलक्षित हुआ कि मानव जीवन में भौतिक संसाधनों की व्यापकता बढ़ी है और मानव का जीवन इन भौतिक संसाधनों से घिर गया है जिसके कारण वह न तो प्रकृति को देख पर रहा है, न उसका आनन्द ले पा रहा है और न ही उसके विषय में चिन्तन कर पा रहा है। इसीलिए प्रकृति और मनुष्य के बीच दूरी बढ़ी है। इसी दूरी के कारण अनेक गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हुई हैं और पारिस्थितिकीय असंतुलन बढ़ा है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ संकटग्रस्त की श्रेणी में आ गयी हैं। नैतिक मूल्यों में गिरावट की वजह से दया, प्रेम, करुणा, त्याग इत्यादि तत्व समाज से समाप्त होते जा रहे हैं और व्यक्ति भावनात्मक की जगह तर्कवादी व भौतिकवादी होता जा रहा है।

समापन सत्र

षष्ठम् सत्र की समाप्ति के पश्चात् सभी उपस्थितजनों को सूक्ष्म जलपान कराया गया। इसके पश्चात् समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसका समय 03:45 से 05:00 बजे तक निर्धारित किया गया। समापन सत्र में जो मंचासीन सदस्य उपस्थित रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

1. मुख्य अतिथि, महन्त मदनगोपालदास, कामदगिरि प्रमुख द्वार चित्रकूट, उ0प्र0
2. डॉ0 आर0सी0 त्रिपाठी, शोध निदेशक, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, म0प्र0
3. डॉ0 ललित सिंह, एसो0प्रोफेसर हिन्दी, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, म0प्र0
4. श्री अभिमन्यु सिंह, निदेशक, सर्वोदय सेवा संस्थान, चित्रकूट, उ0प्र0
5. डॉ0 राजेश कुमार पाल, संयोजक एवं प्राचार्य, राष्ट्रीय संगोष्ठी
6. डॉ0 अमित कुमार सिंह, सहसंयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

समापन सत्र में मुख्य अतिथि महंत श्री मदनगोपालदास ने कहा कि प्राचीन भारत संसार में विश्वगुरू के रूप में जाना जाता था जो कि प्राचीन शिक्षा पद्धति, धार्मिक व आध्यात्मिक संस्कृति, संस्कार, दर्शन, नैतिक मूल्यों की देन थी किन्तु आज का व्यक्ति अपनी प्राचीन संस्कृति, संस्कारों, मूल्यों से दूर होता जा रहा है। महंत जी ने प्राचीन धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति और दर्शन को वैज्ञानिकता से जोड़ने पर बल दिया। भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता के गौरवपूर्ण महत्व को बताते हुए धार्मिक ग्रन्थों, नैतिक शिक्षा, दर्शन आदि तत्वों को पथ प्रदर्शक बनाने पर जोर दिया। डॉ0 आर0सी0 त्रिपाठी ने

आधुनिक संचार साधनों के सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की। डॉ0 ललित सिंह ने भारतीय संस्कृति के आदर्श के रूप में भगवान राम एवं चित्रकूट के महत्व का वर्णन किया। संयोजक एवं प्रभारी प्राचार्य डॉ0 राजेश कुमार पाल ने कहा कि मनुष्य आधुनिकता की चकाचौध से इस प्रकार प्रभावित है कि उसके सम्मुख परिवार, संस्कार, समाज, नैतिक मूल्य, धर्म, दर्शन का कोई महत्व नहीं रह गया है। डॉ0 अमित कुमार सिंह ने संगोष्ठी की आख्या प्रस्तुत की और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन का कार्य डॉ0 वंशगोपाल ने किया।

संगोष्ठी के निष्कर्ष

''प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के जो बिन्दु निर्धारित किये गये थे उन सबसे संबंधित व्याख्यान एवं शोध–पत्र पढ़े गये। इन व्याख्यानों एवं शोधपत्रों के प्रस्तुतीकरण के फलस्वरूप जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नवत् हैं–

- वर्ण व्यवस्था प्राचीन भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है किन्तु वर्तमान में इस व्यवस्था का व्यवहारिक रूप से कोई महत्व नहीं है। वर्तमान में इसका महत्व केवल सैद्धान्तिक ही है।
- आश्रम व्यवस्था जीवन के दीर्घायु की संकल्पना है परन्तु आज के भौतिकवादी युग में समस्त आश्रमों का निर्वाह बहुत ही कठिन है। अन्तिम आश्रम अर्थात् सन्यास आश्रम तक तो कुछ ही लोग पहुँच पाते हैं। आश्रम व्यवस्था के उद्देश्य भी पूरी तरह परिवर्तित हो गये हैं।
- कर्म का सिद्धांत यद्यपि अपना कुछ प्रभाव कायम किये हुए है जिसके कारण अभी भी बहुत से लोग गलत कार्यों को करने से बचते हैं। जन्म और पुनर्जन्म भी कर्म के सिद्धांत पर ही आधारित है।
- संयुक्त परिवार अब मात्र अवशेष के रूप में ही बचे हैं। विकास के अन्तिम पायदान पर पहुँचने वाले लोग यद्यपि संयुक्त परिवार के पक्ष में हैं परन्तु अब उनकी स्थापना असंभव है क्योंकि उस तरह के वातावरण की उपलब्धता संभव नहीं है। नौकरी–पेशा वाले दम्पत्ति भी संयुक्त परिवार के पक्ष में हैं। बच्चों, वृद्धों एवं संस्कारों की दृष्टि से संयुक्त परिवार आज भी प्रासंगिक हैं।
- हिन्दू विवाह के स्वरूप में अमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। विवाह में संस्कारों, रीति–रिवाजों का विलोपन बहुत तीव्र गति से हुआ है। विवाह में दिखावापन एवं फिजूलखर्ची चरम रूप में देखने को मिलती है। विवाह विच्छेद एक सामान्य बात हो गयी है। लिव इन रिलेसनशिप, सरोगेट मदर ने विवाह संस्था के उद्देश्य ही परिवर्तित कर दिये हैं।
- परम्परागत संस्कारों की संख्या दिनोदिन अल्प होती जा रही है और उनका कोई विकल्प मौजूद नहीं है। बर्थ–डे, शादी की सालगिरह, बॉय–बॉय, टा–टा, लाइक जैसे मूल्यहीन संस्कार तेजी से प्रचलित हुए हैं।
- पुरुषार्थ में धर्म एवं मोक्ष का महत्व कम हुआ है जबकि अर्थ एवं काम की लालसा वर्तमान में तीव्रतम है। अर्थ प्राप्ति के लिए वर्तमान में व्यक्ति प्रत्येक मापदण्ड तोड़ने को तैयार है। कामवासना पर संयम न होने के कारण यौन अपराधों की संख्या में दिनोदिन बढ़ोत्तरी हो रही है।

- परम्परागत गाँव पंचायतें बहुत ही कम बची हैं और जो बची भी हैं उनका प्रभाव पहले जैसा नहीं रहा। वर्तमान में त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्था में पनपे भ्रष्टाचार एवं चुनाव में प्रदर्शन व फिजूलखर्ची व उसके उपरान्त पनपी दुश्मनी इत्यादि को देखते हुए तो परम्परागत पंचायतें ही अच्छी दिखायी देती हैं।
- बच्चों के समाजीकरण के प्राथमिक साधनों परिवार, पड़ोस, खेल–कूद समूह का प्रभाव बहुत कम हुआ है जबकि समाजीकरण में यान्त्रिक एवं द्वितीयक साधनों का प्रभाव बढ़ा है। इसी का परिणाम है कि बच्चों में चिड़चिड़ापन, यौन अपराध, हिंसा, मारपीट, आत्महत्या इत्यादि की घटनायें देखने को मिल रही हैं।
- भौतिक संसाधनों की व्यापकता ने मानव जीवन को अपने अधीन कर लिया है। मनुष्य आज मात्र एक परनिर्भर प्राणी बन कर रह गया है।
- सामाजिक जीवन को सुदृढ़ करने में नैतिक मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है। परन्तु नैतिक मूल्यों को पुष्पित व पल्लवित करने वाली संस्थाएँ आज स्वयं संकट में हैं। ऐसे में नैतिक मूल्यों का पालन करवाना बहुत कठिन होता जा रहा है।
- मनुष्य भौतिकवाद में इस तरह समाया है कि वह प्रकृतिवाद के विषय में सोच भी नहीं रहा। जीव–जन्तु, वनस्पति, कीट–पतंग इत्यादि से मानव का संपर्क बहुत तेजी से टूटा है।
- वर्तमान में भौतिक संस्कृति के सामने अभौतिक संस्कृति फीकी पड़ती जा रही है। परम्परा, रीति–रिवाज, मूल्य, खान–पान, पहनावा, मान–सम्मान इत्यादि मूल्यों का अब भौतिकता के सामने कोई महत्व नहीं रह गया।

संगोष्ठी में प्राप्त शोध पत्रों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। प्रकाशित पुस्तक आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली को प्रेषित है।

अनुसंधान के क्षेत्र में संगोष्ठी की उपादेयता

यह बिलकुल सत्य है कि राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन एक सीमित दायरे या आयोजन हाल तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। संगोष्ठियों के आयोजन से अनुसंधान, मानव कल्याण, नवाचार, प्रभाव, दुष्प्रभाव इत्यादि जो भी विचार प्रस्फुटित हों उन्हें आगे विस्तार दिया जाना चाहिए ताकि आगे नये आयाम विकसित हो सकें। **''प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता''** विषयक संगोष्ठी से तमाम ऐसे बिन्दु उभर कर सामने आये जो अनुसंधान का आधार तो बनते ही हैं साथ ही मनुष्य को अपनी प्राचीन संस्थाओं के गुणों व लाभों से भी परिचित करवाते हैं। संगोष्ठी की अनुसंधान व मानव जीवन में उपादेयता को हम निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत व्यक्त कर सकते हैं–

1. यद्यपि आश्रम व्यवस्था को पूरी तरह वर्तमान में नहीं अपनाया जा सकता परन्तु इसके कल्याणकारी पहलुओं को खोजकर उनका प्रसार किया जाये और साथ ही पुरुषार्थ जिनको विभिन्न आश्रमों के अन्तर्गत निर्वहन किया जाता था, उनकी महत्ता को भी आधुनिक जीवन में व्यक्त करने की आवश्यकता है। आश्रम व्यवस्था में गृहस्थाश्रम को संगम कहा गया है परन्तु वर्तमान में सबसे संकट मनुष्य का गृहस्थ जीवन है जो तनाव का केन्द्र बनते जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में अनुसंधान की व्यापक आवश्यकता है ताकि मनुष्य के घरेलू जीवन को स्थिरता मिल सके।
2. परिवार एवं विवाह भावनात्मकता व त्याग के केन्द्र हैं जिन्हें वर्तमान में बहुत हल्के दृष्टिकोण से देखा जाने लगा है जिसके कारण अनेक समस्याओं ने जन्म लिया है।

परिवार एवं विवाह के मूल अवयवों को कैसे बचाया जा सके इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है। साथ ही परिवार एवं विवाह की संरचना को कैसे सुदृढ़ किया जा सके इस पर भी अनुसंधान के नये क्षेत्र प्रस्फुटित हो रहे हैं।

3. संस्कारों के वर्तमान में कौन से स्वरूप लागू हों, समाजीकरण के कौन से साधन बच्चों में सदाचार व नैतिकता विकसित करने में सहायक हो सकते हैं, अपराधों को कैसे कम किया जाय, ग्रामीण जीवन को कैसे बचाया जाय, भौतिक विस्तार को कैसे कम किया जाय, प्रकृति के दर्शन कैसे नजदीक हों इत्यादि संगोष्ठी के माध्यम से अनुसंधान के नये क्षेत्रों को इंगित करते हैं।

"प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता"
"Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance"

List of Paper Presentators

क्र.	नाम	पदनाम	वि.वि./महा./संस्था का नाम
1.	अर्जुन सिंह	असि. प्रो. समाजशास्त्र	श्री वशिष्ठ नारायण करवरिया महाविद्यालय, राजापुर, चित्रकूट
2.	डॉ. राममूरत	असि.प्रो. राजनीति वि.	श्री किशोर गोस्वामी महाविद्यालय कुलपहाड़, महोबा, उ.प्र.
3.	डॉ. एल.सी. अनुरागी	एसो.प्रो. राजीनति वि.	वीरभूमि राजकीय महाविद्यालय महोबा, उ.प्र.
4.	डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय	एसो.प्रो. इतिहास	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उ.प्र.
5.	डॉ. अनिल कुमार	असि.प्रो. समाजशास्त्र	कमला नेहरू पी.जी. कालेज, तेजगाँव, रायबरेली, उ.प्र.
6.	डॉ. राजेश त्रिपाठी	एसो.प्रो. समाजशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
7.	शैलेन्द्र प्रताप सिंह परिहार	शोधछात्र समाजशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
8.	डॉ. आरती गुप्ता	असि.प्रो. समाजशास्त्र	छत्रपति शाहूजी महिला महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट, उ.प्र.
9.	नेहा गुप्ता	एम.ए. समाजशास्त्र	फिरोजगाँधी कालेज रायबरेली, उ.प्र.
10	डॉ. सदन सिंह	असि.प्रो. शिक्षाशास्त्र	कमला नेहरू पी.जी. कालेज, तेजगाँव, रायबरेली, उ.प्र.
11.	रामदरस सिंह यादव	असि.प्रो. समाजशास्त्र	बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी उ.प्र.
12.	रवीन्द्र कुमार सिंह	शोधछात्र शिक्षाशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
13.	सोनू गुप्ता	शोधछात्र समाजशास्त्र	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
14.	शिव कुमार केसरवानी	शोधछात्र इतिहास	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
15.	डॉ. गोविन्द अग्रवाल	असि.प्रो. समाजशास्त्र	राजकीय महाविद्यालय, बबराला गुन्नौर, संभल उ.प्र.
16.	पारुल शर्मा	शोधछात्र	मदरहुड विश्वविद्यालय रुड़की उत्तराखण्ड
17.	डॉ. बालकृष्ण चौरसिया	असि.प्रो. हिन्दी	कमला नेहरू पी.जी. कालेज, तेजगाँव, रायबरेली, उ.प्र.
18.	जयप्रकाश सरोज	असि.प्रो.	जी.सिंह. लॉ. कालेज कसेरुआ खुर्द, सहसो प्रयागराज, उ.प्र.
19.	चन्द्रप्रकाश	शोधछात्र समाजशास्त्र	डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
20.	सुयश दुबे	शोधछात्र समाजशास्त्र	बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, म.प्र.
21.	रविकरण	शोधछात्र	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.

22.	किरन सिंह	शोधछात्र समाजशास्त्र	डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
23.	रचित पाण्डेय	शोधछात्र हिन्दी	चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उ.प्र.
24.	डॉ. सरोज गुप्ता	एसो.प्रो. शिक्षाशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
25.	शशि प्रभा	शोधछात्र शिक्षाशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
26.	सन्तराम पाल	शोधछात्र समाजशास्त्र	डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
27.	डॉ. कविता गौतम	असि.प्रो. संस्कृत	छत्रपति शाहूजी महिला महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट, उ.प्र.
28.	रिचा वाजपेयी	शोधछात्र समाजशास्त्र	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
29.	डॉ. लालजी यादव	शोध विभाग	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
30.	डॉ. माया देवी	–––	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
31.	सन्तोष कुमार मौर्य	शोधछात्र समाजशास्त्र	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ.प्र.
32	मनीष पटेल	असि.प्रो. समाजशास्त्र	राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी, उ.प्र.
33.	डॉ. ज्योती सिंह गौतम	असि.प्रो. राजनीति वि.	राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी, उ.प्र.
34	प्रतिमा सिंह	असि.प्रो. हिन्दी	बी.डी.जैन गर्ल्स डिग्री कालेज आगरा, उ.प्र.
35	डॉ0 तिरमल सिंह	एसो.प्रो. शिक्षाशास्त्र	जे.एन.पी.जी. कालेज लखनऊ, उ.प्र.
36	डॉ. नीरज गुप्ता	असि.प्रो. हिन्दी	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चित्रकूट
37	माधुरी	शोधछात्र समाजशास्त्र	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
38	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	असि.प्रो. हिन्दी	दयानन्द वैदिक कालेज उरई, जालौन, उ.प्र.
39	शुभांगी पाण्डेय	शोधछात्र समाजशास्त्र	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
40	नसीम अख्तर	असि.प्रो. समाजशास्त्र	बी.डी.जैन गर्ल्स डिग्री कालेज आगरा, उ.प्र.
41	डॉ. सुनीता श्रीवास्तव	असि.प्रो. समाजशास्त्र	जे.आर.एच.यू. चित्रकूट, उ.प्र.
42	गजेन्द्र सिंह	शोधार्थी समाजशास्त्र	म.गां.चि.ग्रामोदय वि.वि. चित्रकूट सतना, म.प्र.
43	डॉ0 प्रमिला मिश्रा	असि.प्रो. संस्कृत	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उ.प्र.
44	प्रियंका कुमारी	शोधछात्र समाजशास्त्र	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ.प्र.
45	डॉ. अतुल कुमार कुशवाहा	असि.प्रो. रसायन वि.	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चित्रकूट
46	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	असि.प्रो. जन्तुविज्ञान	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चित्रकूट
47	डॉ. अनिल कुमार सिंह	असि.प्रो. हिन्दी	राजकीय महाविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
48	रासविहारी	असि.प्रो. हिन्दी	कमरुद्दीन मेमोरियल कालेज स्योंढा बाँदा, उ.प्र.
49	कमलेश कुमार	असि.प्रो. समाजशास्त्र	राजकीय महिला महाविद्यालय झाँसी, उ.प्र.
50	राधा मिश्रा	शोधछात्र समाजशास्त्र	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
51.	डॉ. अनुपम पाल	असि.प्रो. समाजशास्त्र	राजकीय महाविद्यालय फिरोजाबाद, उ.प्र.
52.	डॉ. राकेश कुमार शर्मा	असि.प्रो. शा. शिक्षा	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चित्रकूट
53.	डॉ. गीता सिंह	असि.प्रो. अर्थशास्त्र	शासकीय कन्या महाविद्यालय, रीवा म.प्र.
54	डॉ0 रचना श्रीवास्तव	एसो.प्रो. समाजशास्त्र	शासकीय कन्या महाविद्यालय रीवा, म.प्र.
55.	डॉ. गुलाबधर	असि.प्रो. चित्रकला	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उ.प्र.
56.	डॉ. रंजना सिन्हा	एसो.प्रो. इतिहास	राजकीय महाविद्यालय बांगरमऊ, उन्नाव, उ.प्र.
57	डॉ. रेनू गुप्ता	असि.प्रो. समाजशास्त्र	डी.एस.एन. पी.जी. कालेज उन्नाव, उ.प्र.

58.	संध्या पाण्डेय	शोधछात्र ललितकला	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट म.प्र.
59.	डॉ. शारदा गर्ग	असि.प्रो. समाजशास्त्र	शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल, म.प्र.
60.	डॉ. अम्बरीश राय	असि.प्रो. दर्शनशास्त्र	जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उ.प्र.
61.	डॉ. गजेन्द्र सिंह	असि.प्रो. समाजशास्त्र	कमरुद्दीन मेमोरियल महाविद्यालय स्योंढा बाँदा, उ.प्र.
62.	डॉ. अमूल्य कुमार सिंह	एसो.प्रो. समाजशास्त्र	साकेत पी.जी. कालेज अयोध्या, उ.प्र.

(डॉ. राजेश कुमार पाल)
संयोजक

प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता
Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance

List of Paper Participants

1. Dr. Preeti Agrawal, Asso. Prof. Education, D.A.V. PG. College Muzaffarpur, U.P.
2. Dr. Ajay Chaure, Dept. of MSW, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
3. Sanjay Chauhan, Research Scholar Social Work, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
4. Preeti Dwivedi, Asst. Prof. Sociology, Mahila PG. College Kidwai Nagar Kanpur, U.P.
5. Aradhana Ojha, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
6. Dr. Nidhi Khare, Asst. Prof. Sociology, Sardar Vallabh Bhai Patel Degree College, Raibarelly, U.P.
7. Dr. P. K. Singh, Asst. Prof.Sociology, Sardar Vallabh Bhai Patel Degree College, Raibarelly, U.P.
8. Maneesha Khare, Research Scholar, Bundelkhand University Jhansi, UP.
9. Dr. Sanjay Kumar Singh, Asso. Profe., Geography, Kamla Nehru PG College Tezgaon Raibarelly.
10. Geeta Devi, Research Scholar, Pecific Academy of Higher Edu.&Research Udaipur, Rajasthan.
11. Toran Sahu, Research Scholar, Pecific Academy of Higher Edu.&Research Udaipur, Rajasthan.
12. Yaduvendra Singh Yadav, Distt. & Session Court, Banda UP.
13. Dr. Pavan Tripathi, Asst. Prof.MSW, J.R.H.U. Chitrakoot, U.P.
14. Dr. Neelam Chaure, Dept. of Political Science, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
15. Durgesh Mishra, Research Scholar, J.R.H.U. Chitrakoot, U.P.
16. Veerendra Kumar Pandey, Research Scholar B.Ed., J.R.H.U. Chitrakoot, U.P.
17. Maneesh Kumar, Research Scholar, MSW, Kasi Vidyapeeth, Varanasi, U.P.
18. Pratima Shukla, Research Scholar, History, J.R.H.U. Chitrakoot, U.P.
19. Mukesh Kumar, Asst. Prof.Economics, GTGDC Karwi Chitrakoot, U.P.
20. Ram Naresh Yadav, Asst. Prof.Mathmatics, GTGDC Karwi Chitrakoot, U.P.
21. Dr. Vansh Gopal, Asst. Prof.Political Science, GTGDC Karwi Chitrakoot, U.P.

22. Seema Kumar, Asst. Prof.Commerce, GTGDC Karwi Chitrakoot, U.P.
23. Dr. Anand Singh, Asst. Prof. Sociology, Govind Vallabh Pant PG College, Jaunpur, U.P.
24. Prabhat Kumar Singh, Research Scholar, VBSP University, Jaunpur, U.P.
25. Balwant Singh Rajodiya, Asst. Prof. Library, GTGDC Karwi Chitrakoot, U.P.
26. Dr. Ram Asare Vishwakarma, Head Master, PMV Laptahan Purwa, Chitrakoot, U.P.
27. Dr. Sangram Singh, Head Master, PMV Buer-II, Chitrakoot, U.P.
28. Dr. Sanjay Kumar Nayak, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
29. Dr. Asha Devi, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
30. Dr. Pradeep Kumar, Asst. Prof. Physical Edu. Govt. PG College Mahoba UP.
31. Dr. Sakuntla, Asso. Prof. Political Science, Dr. B.R. Ambedkar Govt. Girls PG College Fatehpur, U.P.
32. Roshni Dwivedi, M.Sc., Pt. J.N. PG College Banda, U.P.
33. Priyanka, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
34. Rajendra Singh, Research Scholar, Dayanand Womens Training College Kanpur, U.P.
35. Asheesh Kumar Chaurasiya, Research Scholar, BHU Varanasi, U.P.
36. Umesh Kumar Yadav, Research Scholar, BHU Varanasi, U.P.
37. Dr. Sailja Dube, Asst. Prof. Higher Institution, Bhopal, M.P.
38. Sonali Singh, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
39. Pradeep Kumar Sharma, Mansarovar University, Bhopal, M.P.
40. Subhash Verma, Research Scholar, Lucknow University Lucknow, U.P.
41. Shailendra Pratap Singh Parihar, Research Scholar Sociology, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
42. Girija Shankar, Research Scholar, PK University Shivpuri, MP.
43. Om Yamini, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
44. Mayur Chandransh Mishra, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P.
45. Ram Naresh, Research Scholar, Barelly College Barelly, UP
46. Dr. Vandna Kushwaha, Asst. Prof. Sociology, Smt. Butubai Degree College Atarra Banda, UP.
47. Dr. Santosh Kumar Pandey, Asst. Prof. Hindi, Govt. PG College Mahoba UP.
48. Dr. D.K. Khare, Asst. Prof. Commerce, Govt. PG College Mahoba UP.
49. Arun Kumar, Asst. Prof. Political Science, Govt. Girls PG College Jhansi, U.P.
50. Dr. Dheerendra Singh, Asst. Prof. Sociology, Govt. Degree College Manikpur, Chitrakoot, U.P.
51. Dr. Ramposh, Asst. Prof. Commerce, Govt. Degree College Manikpur, Chitrakoot, U.P.
52. Dr. Harishchandra Agrahari, Asst. Prof. Hindi, Govt. Degree College Jaitwara, Satna, MP.
53. Dr. Pramod Kumar, Asst. Prof. Chemistry, Govt. Degree College Manikpur, Chitrakoot, U.P.
54. Seetesh Bharti, Reseach Scholar, Pt. Shambhunath Shukla Universty, Sahdol, MP.
55. Dr. K. C. Verma, Asst. Prof. Physics, Govt. PG College Mahoba UP.
56. Dr. Hariom Diwakar, Asst. Prof., Govt. Girls PG College Jhansi, U.P.
57. Dr. S.S. Kushwaha, Asst. Prof. Govt. Girls PG College Jhansi, U.P.
58. Dr. Diwakant Samadhiya, Asst. Prof. Govt. Girls PG College Jhansi, U.P.

59. Tanuj Kumar, Asst. Prof. Govt. Girls PG College Jhansi, U.P.
60. Devesh Shukla, Asst. Prof. Handiya Baba PG College Kashai, Karwi Chitrakoot, U.P.
61. Sandeep Kumar Dwivedi, Asst. Prof., VN Karwariya Degree College Rajapur Chitrakoot, U.P.
62. Manoj Kumar Mishra, Research Scholar, APS University Rewa, MP.
63. Pramod Verma, Research Scholar, Hindu College Mooradabad, UP.
64. Maya Devi, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
65. Yogesh Pratap Singh, Social Development Institution Chitrakoot, U.P.
66. Denesh Sharma, Govt. Girls PG College Rampur UP.
67. Susheel Singh, M.A. Political Science, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
68. Luxmikant Mishra, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
69. Upasna Singh, Piramil Foundation, Chitrakoot, U.P.
70. Brajesh Prakash Shukla, Research Scholar, Jeevaji University Gwalior, MP.
71. Dr. Zeba Khan, Asst. Prof. Sanskrit, Govt. Girls PG College Banda UP
72. Chandra Prakash, Research Scholar, Dr. Ram Manohar Lohiya University, Ayodhya, U.P.
73. Kiran Singh, Research Scholar, Dr. Ram Manohar Lohiya University, Ayodhya, U.P.
74. Priyansi Dixit, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
75. Shivani Mishra, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
76. Mo. Yasir Ali, Unviersity of Allahabad, UP.
77. Pooja Tripathi, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
78. Dr. Ghanshyamdas, Asst. Prof. Sociology, Govt. PG College Hamirpur, U.P.
79. Dr. Murlidhar Singh, JRHU Chitrakoot, U.P.
80. Atrimuni Tripathi, Dept. of MSW, JRHU Chitrakoot, U.P.
81. Atul Shrivastava, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
82. Dr. Reena Pandey, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
83. Dilip Kumar, Asst. Prof., Commerce, JRHU Chitrakoot, U.P.
84. Dr. Amita Tripathi, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
85. Bhavishya Mathur, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
86. Dr. Tripti Rastogi, Asst. Prof. Economics, JRHU Chitrakoot, U.P.
87. Nihar Ranjan Mishra, Asst. Prof. Education, JRHU Chitrakoot, U.P.
88. Dr. Rajneesh Kumar Singh, Asst. Prof. B.Ed., JRHU Chitrakoot, U.P.
89. Horilal, Asst. Prof. Math, Govt. PG College Charkhari, Mahoba, U.P.
90. Vinod Kumar, Bundelkhand University, Jhansi, U.P.
91. Dr. Manju Singh, Asst. Prof. Sanskrit, Govt. PG College Charkhari, Mahoba, U.P.
92. Shruti Pandey, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
93. Kuldeep Singh, Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi, U.P.
94. Dr. Hemant Kumar Baghel, Asst. Prof. Physics, Govt. Degree College Manikpur Chitrakoot, U.P.
95. Dr. Sanjeev Kumar Gupta, Asst. Prof. Physical Edu., Govt. PG College Charkhari, Mahoba, U.P.

96. Madan Mohan Pandey, Asst. Profe., Handiya Baba PG College Kashai, Karwi Chitrakoot, U.P.
97. Dr. Shri Narayan Shukla, Principal, Handiya Baba PG College Kashai, Karwi Chitrakoot, U.P.
98. Dr. Ritesh Tripathi, Asst. Prof. Sociology, CMP Degree College Prayagraj UP
99. Anant Singh Jeliyang, CMP Degree College Prayagraj UP.
100. A.K. Singh, Research Scholar., VBSP University, Jaunpur, U.P.
101. Jitendra Pratap Singh, Research Scholar, JRHU Chitrakoot, U.P.
102. Dr. Govind Agrawal, Asst. Prof. Sociology, Govt. PG College Babrala, Gunnaur, Sambhal UP.
103. Om Prakash, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
104. Ravi Prakash Shukla, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
105. Vimal Kumar, Asst. Profe., Govt. PG College Babrala, Gunnaur, Sambhal UP.
106. Dr. Vandana, Asst. Prof. Sanskrit, Govt. PG College Hamirpur, U.P.
107. Dr. Sandhya Pandey, Asst. Profe., JRHU Chitrakoot, U.P.
108. Dr. Ashok Kumar, Asst. Prof. Economics, Govt. PG College Charkhari, Mahoba, U.P.
109. Dr. Deepak Singh, Asst. Prof. Political Science, Govt. PG College Charkhari, Mahoba, U.P.
110. Amritanshu Mishra, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
111. Anjali Kumari, Research Scholar, M.G.C.G.V. Chitrakoot Satna, M.P
112. Reena Singh, M.Sc. Pt J.N. PG College Banda. UP
113. Anjali Verma, M.Sc. Pt J.N. PG College Banda. UP
114. Neha Patel M.Sc. Pt J.N. PG College Banda. UP
115. Gaurav, M.A. Sociology Final, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
116. Neha Tripathi, M.A. Sociology Final, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
117. Anjali, M.A. Sociology Final, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
118. Ichchha Mishra, M.A. Hindi Final, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
119. Roshni, M.A. Sociology Previous, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
120. Laxmi, M.A. Sociology Previous, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
121. Shifa, M.A. Sociology Previous, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
122. Vaishali, M.A. Sociology Previous, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
123. Vishnu Kesharwani, M.A. Sociology, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
124. Jai Singh, , M.A. Sociology, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.
125. Shankar Raikwar, M.A. Sociology, Goswami Tulsidas Govt. PG College Karwi, Chitrakoot. U.P.

Dr. Rajesh Kumar
Convener

National Seminar
on
Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance

National Seminar
on
Ancient Indian Social Institutions and its Present Relevance
Dr. Rajesh Kumar Pal

नवीन चुनौतियां झेल रहीं अनादि काल की परम्पराएं: प्राचार्य

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्वानों ने रखे विचार

20/01/2020 लोक भारती, कानपुर P. 5.

संगोष्ठी में मौजूद अतिथिगण

चित्रकूट। गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासांगिकता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रो कपिलदेव मिश्र कुलपति, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय जबलपुर व महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राजेश कुमार पाल ने किया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि डॉ विनोद शंकर सिंह, डॉ राजेश त्रिपाठी, डॉ राकेश राणा, अभिमन्यु सिंह मौजूद रहे।

संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ राजेश कुमार पाल ने कहा कि प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाओं में सामूहिकता एवं स्थायित्व का गुण विद्यमान था। जीवन में उच्च आदर्शों की प्रधानता थी। आर्थिक तत्व साध्य न होकर साधन मात्र था, परन्तु वर्तमान में आर्थिक तत्व ही सब कुछ बनकर रह गया है। परन्तु भारतीय समाज आज एक संक्रमणकालीन स्थिति से गुजर रहा है। अनादिकाल से चली आ रहीं परम्परायें, संस्थायें एवं मान्यतायें नवीन चुनौतियों का सामना कर रही हैं। मनुष्य भौतिकवादी संस्कृति में इस तरह डूबता जा रहा है कि उसे अपने जीवन का ही पता नहीं है। उसका एकमात्र लक्ष्य अधिक से अधिक धन कमाना और असीम भौतिक वस्तुओं का उपभोग करना ही रह गया है। पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क ने पिछली शताब्दी में भारतीयों को अपने मूल्यों तथा दृष्टिकोणों को पुनिरीक्षित करने को विवश किया है! आज यह प्रश्न पुनः भारतीय मनीषो को व्यग्र कर रहा है कि कैसे अपने वैशिष्ट्य बनाये रखते हुए भी पाश्चात्य ज्ञान, प्रौद्योगिकी और जीवनस्तर को अपना सकें। मुख्य अतिथि प्रो कपिलदेव मिश्र ने प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था, संस्कार तथा सनातनी परम्परा के विषय में विषद् प्रकाश डाला। उन्होंने रामायण, भगवद् गीता एवं वेद, उपनिषदों की युगानुकूल व्याख्या करने पर बल दिया। जिससे प्राचीन भारतीय संस्कृति नवीन आधुनिक मूल्यों के साथ समायोचित हो सके। जिससे परम्पराओं के वाहक के साथ ही नवीन मूल्यों को आत्मसात कर सके। उन्होंने कहा कि आज प्राचीन संस्कृति एवं मूल्यों संजोये रखने के लिए प्राचीन संस्थाओं को उनके मूलस्वरूप में जीवित रखना होगा। इसके लिए शिक्षण संस्थाओं, विश्व विद्यालयों, समाजसेवी संगठनों एवं पारिवारिक संस्थाओं को आगे आना होगा। प्रथम तकनीकी सत्र में पं जेएनपीजी कालेज बाँदा के विद्वान प्राध्यापकों ने चर्चा की। द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में कुलसचिव दिव्यांग विश्व विद्यालय चित्रकूट डॉ महेन्द्र उपाध्याय उपस्थित रहे। वक्ताओं में डॉ जेपी सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय बाँदा डॉ विनोद मिश्र दिव्यांग विश्व विद्यालय, डॉ अनिल कुमार सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय झाँसी, डॉ एलसी अनुरागी राजकीय महाविद्यालय महोबा, डॉ एस कुरील महामति प्राणनाथ महाविद्यालय मऊ, डॉ देवेन्द्र पाण्डेय एसो. प्रो महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय प्रमुख रूप से रहे। संगोष्ठी में आये हुए अतिथियों का आभार डॉ अमित कुमार सिंह, सहसमन्वयक ने जताया। संचालन डॉ वंशगोपाल ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ धमेन्द्र सिंह, डॉ रामनरेश यादव, डॉ सीमा कुमारी, डॉ मुकेश कुमार, डॉ अतुल कुमार कुशवाहा, डॉ राकेश कुमार शर्मा, डॉ नीरज गुप्ता सहित छात्र, छात्राएँ उपस्थित रहे।

'आध्यात्म, दर्शन, प्राचीन संस्कृति को बनाए पथ प्रदर्शक'

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

गोष्ठी में मौजूद अतिथिगण।

चित्रकूट। गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचीन भारतीय समाजिक संस्थाएँ एवं वर्तमान में उनकी प्रासांगिकता विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र का शुभारम्भ मुख्य अतिथि कामद्गिरि के महन्त मदन गोपाल दास महाराज एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राजेश कुमार पाल ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मंच पर विशिष्ट अतिथि महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय के डॉ आरसी त्रिपाठी, डॉ राजेश त्रिपाठी, सर्वोदय सेवा आश्रम के अभिमन्यु सिंह उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि महन्त मदनगोपाल दास ने कहा कि प्राचीन भारत संसार में विश्वगुरु के रूप में जाना जाता था जो प्राचीन शिक्षा पद्धति, धार्मिक व आध्यात्मिक संस्कृति पारिवारिक संस्कार, दर्शन एवं नैतिक मूल्यों की देन थी, किन्तु आज का भारतीय अपने प्राचीन संस्कृतियों, संस्कारों, मूल्यों से दूर होता जा रहा है। इसलिए उन्होंने प्राचीन धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति और दर्शन को वैज्ञानिकता, नैतिक मूल्यों से जोड़ने पर बल दिया। भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता के गौरवपूर्ण महत्व को बताते हुए धार्मिक ग्रंथों, नैतिक शिक्षा, दर्शन आदि तत्वों को पथ प्रदर्शक बनाने पर जोर दिया। संगोष्ठी में आये अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राजेश कुमार पाल ने कहा कि आज समाज की संस्थाएँ वास्तव में खतरे पर हैं जो वेहद चिन्तजनक है। मनुष्य आधुनिकता की चकाचौंध से इस प्रकार प्रभावित है कि उसके सम्मुख परिवार, संस्कार, समाज, नैतिक मूल्य, धर्म, दर्शन का कोई महत्व नहीं रह गया। इसलिए यह तय करना होगा कि अपना पथ प्रदर्शक आध्यात्म, दर्शन, प्राचीन संस्कृति को बनायें अथवा उपभोक्तावादी संस्कृति को। इसके पूर्व तृतीय तकनीकी सत्र में सीएमपी डिग्री कालेज के डॉ चिरन्जीव एवं महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ रामनरेश यादव, सह समन्वयक डॉ अमित कुमार सिंह, डॉ सीमा कुमारी, डॉ मुकेश कुमार, डॉ अतुल कुमार कुशवाहा, डॉ धमेन्द्र सिंह, डॉ राकेश कुमार शर्मा, डॉ नीरज गुप्ता आदि ने विषयानुकूल व्याख्या की। संचालन समारोहक डॉ वंशगोपाल ने किया। संगोष्ठी में दूरदराज से आये शोध छात्रों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस अवसर डॉ बलवन्त सिंह राजौदिया, छात्र, छात्राएँ व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।